दीयांर (दीमक) को भी औषधि के रुप में उपयोग करते हैं पारंपरिक चिकित्सक

* 14 से अधिक रोगों के उपचार में पारंपरिक उपयोग

* दीमक को उपयोगी कीट का दर्जा

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे ं जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य में दीमक के विविध उपयोगों विशेषकर औषधि उपयोग से संबंधित पारंपरिक ज्ञान का असीमित भंडार उपस्थित है। पारंपरिक चिकित्सक दीमक का आंतरिक और बाहरी प्रयोग 14 से अधिक प्रकार के रोगों में कर रहे हैं। मनुष्यों और पशुओं दोनो ही के रोगों मे दीमकों का पारंपरिक उपयोग होता है।छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य में दीमक के विविध उपयोगों विशेषकर औषधि उपयोग से संबंधित पारंपरिक ज्ञान का असीमित भंडार उपस्थित है। पारंपरिक चिकित्सक दीमक का आंतरिक और बाहरी प्रयोग 14 से अधिक प्रकार के रोगों में कर रहे हैं। मनुष्यों और पशुओं दोनो ही के रोगों मे दीमकों का पारंपरिक उपयोग होता है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल एवं एथनोएन्टोमोलॉजिकल अध्ययनों और सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि दीमक की बाम्बी के आस-पास उग रही वनौषधियों को औषधीय गुणों से परिपूर्ण माना जाता है। बाम्बी के आस-पास कुछ विशेष प्रकार की वनौषधियाँ उगती हैं जो कि अन्य परिस्थितियों व क्षेत्रों में नही उग पाती है। इन वनौषधियों में बाम्बी भाजी प्रमुख है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक बाम्बी भाजी का प्रयोग शरीर को विषमुक्त बनाने मे करते हैं। बाम्बी भाजी छत्तीसगढ़ मे बड़े चाव से खायी जाती है। बाम्बी के आस-पास की मिट्टी को उर्वर माना जाता है। औषधिय फसलों की खेती कर रहे किसानों को पारंपरिक चिकित्सक इस मिट्टी को गोबर खाद के साथ मिलाकर डालने की सलाह देते है। सजावटी पौधों विशेषकर गुलाब की जड़ों के पास इस मिट्टी की उपस्थिती गुलाब को कीड़ों से बचाने में सक्षम होती है। गुलकंद के लिए गुलाब के पौधे लगाने वाले पारंपरिक चिकित्सक इस मिट्टी का प्रयोग करते है। बाम्बी के आस-पास की मिट्टी हर्रा, बहेरा, सिरसा जैसे वृक्षों को औषधि गुणों से परिपूर्ण करने में भी सक्षम है। यूं तो दीमक की सभी अवस्थाओं का प्रयोग औषधि के रुप में परंपरागत रुप से होता है। पर दीमक की रानी का प्रयोग लोकप्रिय है। नव - विवाहित जोड़ों को उपहार के रुप मे इसे दिया जाता है। यह बलवर्धक के रुप मे उपयोगी है। छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में रानी से बने पारंपरिक व्यंजन प्रचलित है। पारंपरिक चिकित्सक उन रोगियों को रानी को खाने की सलाह देते हैं जो कि अपने शरीर की प्रतिरोधक क्षमता गंवा चुके होते है। पंकज अवधिया का मानना है कि दीमक की रानी के विषय में यह पारंपरिक ज्ञान जटिल रोगों जैसे एड्स, जिसमें रोगी की प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है, की चिकित्सा में अहम भूमिका निभा सकता है। राज्य के पशुपालक खुरपका मुंहपका रोग मे दीमक की बाम्बी की मिट्टी का प्रयोग करते है। गोरे बच्चे की प्राप्ति के लिये भी बाम्बी की मिट्टी का प्रयोग अल्प मात्रा मे गर्भावस्था के दौरान किया जाता है। किसान जब नयी भूमि का चुनाव करते हैं तो बाम्बी की ऊंचाई देखकर ही भूमि की प्रकृति की पहचान करते है। राज्य में बाम्बी को भूमिगत जल का सूचक भी माना जाता है। राज्य के बहुत से भागों के किसान दीमक की बाम्बी को केवल इसलिये नही तोड़ते हैं क्योकि यह सांप का आश्रय स्थल है और सांप चूहों की प्राकृतिक आबादी पर नियंत्रण करने में उपयोगी है। बादाम उत्पादक किसान तो फलों के ऊपरी आवरण को हटाने के लिये दीमकों की सहायता लेते है फलों को बाम्बी के पास रखकर दीमकों की सेवाएं ली जाती है। दीमक के व्यस्क जब लाखों की संख्या मे बाहर उड़ते हैं तो इसे खराब स्वास्थ्य वाले मौसम का परिचायक माना जाता है। पारंपरिक चिकित्सक इस समय विशेष सावधानी बरतने की सलाह देते है। पंकज अवधिया ने इस अनूठे पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया है। उनका मानना है कि दीमक के उजले पक्ष और लाभों के विषय में जागरुकता लाने की आवश्यकता है। और साथ ही इसके पारंपरिक औषधि गुणों पर पर्याप्त शोध आवश्यक है ताकि एड्स जैसे जटिल रोगों की चिकित्सा मे इनका प्रयोग किया जा सके।